LAST MOMENT

GILLETTE & TOLERANCE

(GOOD AND EVIL)

FERDINANDO FREGA

GILLETTE और सहिष्णुता

छोटी पंक्तियों में लिखा बारह अंशों का एक घोषणापत्र: अच्छाई स्वाभाविक नहीं, बल्कि नाज़ुक, सोची-समझी और महँगी है; बुराई कार्यात्मक है और उसे राक्षसों की आवश्यकता नहीं; कोई तटस्थता नहीं है और पढ़ने के इर्द-गिर्द कोई समुदाय नहीं बनता। अंत में लेखक हट जाता है और एक पत्र पाठक से सहमति नहीं, एक स्थिति माँगता है।

I. एक अनचाही भूमिका

यह पाठ प्रसन्न करने के लिए नहीं लिखा गया।
यह सिखाने के लिए नहीं लिखा गया।
यह बचाने के लिए नहीं लिखा गया।

यह इसलिए है क्योंकि कुछ लोगों ने बहुत कुछ देख लिया है।
और एक बार देख लेने के बाद, दिखावा करना संभव नहीं रहता।
अच्छाई अपने आप नहीं आती।
बुराई आती है।
यह कोई राय नहीं है।
यह एक अप्रिय तथ्य है।

II. अच्छाई की झूठी मासूमियत

अच्छाई स्वाभाविक नहीं है।
वह नाज़ुक है, सोची-समझी है, और महँगी है।
जो मानते हैं कि अच्छाई सहज होती है,
उन्हें कभी सचमुच उसकी रक्षा नहीं करनी पड़ी।
अच्छाई माँगती है:

- उपस्थिति
- प्रयास
- संयम
- हानि

अच्छाई सुविधा में नहीं उगती।
अच्छाई धारा के विरुद्ध उगती है।
इसीलिए उसे अक्सर कमज़ोरी समझ लिया जाता है।

III. बुराई की सामान्यता

बुराई को बुलाने की आवश्यकता नहीं होती।
उसे अनुष्ठानों की आवश्यकता नहीं।
उसे राक्षसों की आवश्यकता नहीं।
बुराई कार्यात्मक है।
वह ढल जाती है।
वह स्वयं को उचित ठहराती है।
वह घुल-मिल जाती है।
बुराई चीख़ती नहीं।
बुराई समझाती है।
वह आपसे कहती है:
• "अभी सही समय नहीं है।"
• "यह मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है।"
• "कोई विकल्प नहीं है।"
• "चीज़ें ऐसे ही चलती हैं।"
बुराई सामान्यता में फलती-फूलती है।

IV. कोई तटस्थता नहीं है

तटस्थता एक आरामदायक मिथक है
जिसे उन्होंने गढ़ा जो चुनाव की क़ीमत चुकाने को तैयार नहीं।

हर न-चुनाव एक चुनाव है।
हर देरी एक आत्मसमर्पण है।
हर औचित्य एक हस्ताक्षर है।

जो अच्छाई को नहीं चुनते,
वे तटस्थ नहीं हैं।
वे बुराई के लिए जगह बनाते हैं।

V. अच्छाई दयालु नहीं है

अच्छाई सांत्वना नहीं देती।
वह सहलाती नहीं।
वह आश्वस्त नहीं करती।
अच्छाई उजागर करती है।
वह आपको दर्पण के सामने खड़ा कर देती है
जब आप कोई बहाना चाहते हैं।
वह जवाबदेही माँगती है:
• उसकी जिससे आप बचे
• उसकी जिसे आपने उचित ठहराया
• उसकी जिसे आपने "ज़रूरी" कहा
अच्छाई सुसंगति माँगती है,
शुद्धता नहीं।

VI. बुराई क्रूर नहीं है

बुराई शायद ही कभी क्रूरता के रूप में सामने आती है।
वह आवश्यकता के रूप में सामने आती है।
उसके पास नौकरी है।
उसके पास परिवार है।
उसके पास एक सम्मानजनक पद है।
असली बुराई:
• बल से नष्ट नहीं करती।
• खुलकर आक्रमण नहीं करती।
• चुपचाप क्षरण करती है।
उसे वे चलाते हैं

जो हानि पहुँचाते हैं
बिना अपने हाथ गंदे किए
और बिना सामाजिक स्वीकृति खोए।

VII. कहानियाँ मुक्ति नहीं देतीं

कहानियाँ हमें समझने में मदद करती हैं।
पर वे बचाती नहीं।
कहानियाँ भावनाएँ जगाती हैं।
पर वे निर्णय नहीं करतीं।
आप गुज़र सकते हैं:
• बीमारी से
• हानि से
• विश्वासघात से
• अन्याय से
• गहरी पीड़ा से
और वैसे ही बने रह सकते हैं।
दर्द आपको बेहतर नहीं बनाता।
वह आपको अधिक दृश्य बनाता है।

VIII. उत्तरदायित्व

आपने जो कुछ भी जिया है,
वह आपको अपने आप "अच्छा" नहीं बनाता।
वह आपको उत्तरदायी बनाता है।
हर दर्द जो रूपांतरित नहीं हुआ,
विष में बदल जाता है।
हर घाव जिसे बहाना बनाया गया,
दूसरों के विरुद्ध हथियार बन जाता है।
उत्तरदायित्व वहाँ है जहाँ कथा समाप्त होती है
और नैतिकता आरंभ होती है।

IX. अच्छाई का एकांत

अच्छाई अक्सर अकेली होती है।
उसके कोई दर्शक नहीं होते।
उसके लिए कोई तालियाँ नहीं होतीं।
वह कोई तात्कालिक प्रतिफल नहीं देती।
वह एक छोटा कृत्य है
जो तब किया जाता है जब कोई देख नहीं रहा।
वह एक सीमा है जो आप स्वयं पर लगाते हैं
जब लाभ उठाना आसान होता।
अच्छाई संसार को नहीं बदलती।
वह दिशा बदलती है।

X. झूठ के रूप में नियति

नियति एक सुरुचिपूर्ण बहाना है
चुनाव के बोझ से बचने का।

ऐसी कोई नियति नहीं जो आपको दोषमुक्त करे।
केवल निर्णयों का एक क्रम है
जिनका कभी ईमानदारी से सामना नहीं किया गया।

संयोग आपके मार्ग में आ सकता है।
पर आप तय करते हैं
कि उसके साथ क्या करें।

भाग्य कोई उपहार नहीं है।
वह अग्रिम में मिला उत्तरदायित्व है।

XI. रेखा

एक क्षण आता है
जब भ्रम संभव नहीं रहता।

एक ओर:
वे जो जानते हैं कि वे बुराई करने में सक्षम हैं
और उसे न करना चुनते हैं।

दूसरी ओर:
वे जो स्वयं को "अच्छा" कहते हैं
ताकि चुनना ही न पड़े।

यही रेखा है।
और कोई नहीं।

XII. कोई समुदाय नहीं

यह घोषणापत्र
कोई समुदाय नहीं बनाता।
यह कोई अपनापन नहीं देता।
यह कोई शरण नहीं देता।
जो रुकते हैं,
अकेले रुकते हैं।
जो जाते हैं,
उन्हें रोका नहीं जाता।

लेखक हट जाता है

इस पाठ के बाद
कोई आगे का भाग नहीं।
कोई व्याख्या नहीं।
कोई लेखक नहीं।
लेखक हट जाता है
क्योंकि अब उसकी आवश्यकता नहीं।
केवल पाठक बचता है,
अपने चुनावों के साथ अकेला।

रहस्योद्घाटन

अच्छाई आपको बेहतर नहीं बनाती।
बुराई आपको बदतर नहीं बनाती।
वे आपको प्रकट करती हैं।
वे प्रकट करती हैं कि आप कौन हैं
जब कोई देख नहीं रहा
और किसी को मनाना नहीं है।

समापन

यदि आप यहाँ सांत्वना खोजने आए हैं,
तो यह ग़लत पाठ है।
यदि आप कोई नीति-कथा ढूँढ रहे थे,
तो आपने अपना समय गँवाया।

यदि आप किसी को दोष देने के लिए खोज रहे हैं,
तो चारों ओर देखिए।

यह कोई सबक़ नहीं है।
यह एक रेखा है।

वृत्त पूरा हो गया।

पाठकों के नाम पत्र

आप यहाँ संयोग से नहीं लाए गए,
पर संयोग आपको दोषमुक्त नहीं करता।
जिज्ञासा मासूमियत नहीं है।
वह एक परीक्षा है।
आपने जो पढ़ा, वह सहमति नहीं माँगता।
वह एक स्थिति माँगता है।
यदि आपने असहजता महसूस की, तो इसलिए कि कुछ छू गया।
यदि आपने कुछ महसूस नहीं किया, तो वह भी एक उत्तर है।

यह पाठ विश्वास नहीं चाहता।
यह मार्गदर्शन नहीं देता।
यह राहत का वादा नहीं करता।
यह आपको उसके साथ छोड़ देता है जो बचता है
जब व्याख्याएँ समाप्त हो जाती हैं।
अब इन शब्दों के पीछे कोई लेखक नहीं खड़ा।
कोई समुदाय आपकी प्रतीक्षा नहीं कर रहा।
कोई निष्कर्ष नहीं आएगा।

केवल आपके चुनाव जारी रहते हैं।
जब आप तैयार हों, पृष्ठ बंद कीजिए।
उससे पहले नहीं।
लेखक हट जाता है
—
आगे जो है

वह

सिद्धांत नहीं है।

वह

चिंतन है।

—

Ferdinando Frega